हरियाली की रंग निराली,
मन में खुशियाँ, मुख पे लाली,

****

वन हमारा धरती धन है,
प्यार करो जैसे अपनापन है,
इसे काटना पागलपन है,
इसके बिना जग सूनापन है,
(वन है तो जन है, वर्ना जीवन मरणासन्न है,)
अत: वृक्ष लगाएँ, जीवन बचाएँ

.....000.....

पेड़ मिटाकर, धन तुम पाकर,
क्या धन ऊपर ले जाओगे,
फल-फूल संग संग छाँव गवाँकर,
एक-न-एक दिन पछताओगे,
.....

"वृक्षों की कराह"

मैंने इन्सान में पत्थर सा जिगर देखा है,
लाख जालिम मिले, मुड़कर के जिधर देखा है,

लोभ न कम है, न दिल में भी जरा सा गम है,
कातिल अब जन है, पेड़ों को गिराने में तन है,
टहनियाँ फूल - फलों, पत्तों संग गिरे देखा है,
कितने लोभी हैं लोग, लालच से घिरे देखा है,
मैंने इन्सान में.....

छाँव भी दी है, साँसों की लड़ी दी हमने,
नाव भी दी है, पतवार बड़ी दी हमने,
भवन हो या हवन, डोली में दुल्हन भेजा है,
मैंने हर मोड़ पे, लोगों का दमन झेला है,
मैंने इन्सान में.....

मैंने लोगों को पग-पग पे सहारा ही दिया,
पालना या पलंग, कुर्सी का सहारा भी दिया,
काटते क्यूँ मुझे, कभी अश्क नहीं देखा है,
कितने बेदर्द हैं लोग, कभी जख्म नहीं देखा है,
मैंने इन्सान में.....

"पर्यावरण का वरण"

ऐ धरती पर रहनेवालों,
उठो ! देखो,
ये क्या से क्या हो गया,
प्रकृति का अपहरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,

"फूल", खुशबू देते थे कभी,
"फल", तृप्ति देते थे कभी,
"पत्ते", शीतलता देते थे कभी,
"शाखाएँ", पक्षियों के बसेरे थे कभी,
आज उन वृक्षों संग मानवता का दहन हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,
प्रकृति का अपहरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,.....

वृक्षों की कराह सुनो,
दर्द भरी सलाह सुनो,
ऐ इन्सानों !

अपनी इन्सानियत सम्भालो,
आज अपने मन से छल को निकालो,
वर्ना !
शुद्ध जल, शुद्ध वायु भी न पाओगे,
तुम्हारी कई पुस्तों को देखा है मैंने,
तुम एक पुस्त भी न देख पाओगे,

'आरी' से चीर सीना मेरा,
कौन रतन पा जाओगे,
नंगे ही जग में आए हो,
नंगे ही जग से जाओगे,

क्यूँ करते हो छोटी, अपनी जीवन डोर,
मार डालो आज, तुम अपने मन का चोर,
हैवानियत का क्यूँ फिर से नवीकरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,
प्रकृति का अपहरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,.....

हर तरफ आग, हर तरफ सूखा,
कितनी ही रातें लोग सोते हैं भूखा,
अरे
! जग में जीना ही अब मरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,
प्रकृति का अपहरण हो गया,
कैसा पर्यावरण हो गया,

ब्रज बिहारी सिंह
हीनू, राँची, झारखण्ड

##########

" पौधों को प्यार "

माँ सी ममता, बच्चों सा दुलार चाहिए,
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

पौधों में ही फूलों का श्रृंगार चाहिए,
देवों को फूलों का न कोई हार चाहिए,
मंदिर में लोगों के शुद्ध विचार चाहिए,
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

फल देते पौधों को ये अधिकार चाहिए,
जब तक फल देते उनपे न वार चाहिए,
डर लोगों में आये ये सुधार चाहिए,
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

हरियाली संग वर्षा की फुहार चाहिए,
कलियुग में भी सतयुग की बहार चाहिए,
वृक्षारोपण घर - घर में एक बार चाहिए,
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

वृक्षो को दे प्यार , वो घर-बार चाहिए,
हर जन-जन के मन में उच्च विचार चाहिए,
हर पौधे पे कान्हा का अवतार चाहिए
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

तपती धरती को ठंढी बयार चाहिए,
वर्षा की बूँदों की अब बौछार चाहिए,
वृक्षों के सेवक को देनी पुरस्कार चाहिए,
आज जमीं पे पौधों को वही प्यार चाहिए,

" हे मानव "

ऐ मानव तु वन अब ना काटो,
इस धरती का श्रंगार है ये,
इन्सानों से खुद को ना छाँटो,
तेरे जीने का आधार है ये,

कुछ लोग यहाँ पर शातिर हैं,
पेड़ों को गिराने में माहिर हैं,
ये धरती को बंजर बनाते हैं,
पर खुद पे ये खंजर चलाते हैं,

कड़ी धुप में छाँव को तरसे मन,
पर लोभ से खुद परेशान हैं ये,
ऐ मानव तु वन अब ना काटो,
इस धरती का श्रंगार है ये,.....

ये फूल और फल भी गवाँते हैं,
और खुशियों के पल भी गवाँते हैं,
ये खुद के घर को सजाते हैं,
पर चिड़ियों के घर को मिटाते हैं,

अब भी तु सम्भल जा ऐ इन्सानों,
तेरे जीने का आधार है ये,
ऐ मानव तु वन अब ना काटो,
इस धरती का श्रंगार है ये,....

"आयो रे बसंत"

भौरों ने फूलों से, मधुरस चुराई है,
अब के बसंत में, तु क्यूँ मुरझाई है,

ठंढ़ी को कोसे क्यूँ, कैसी चतुराई है,
शीतल करे मन को, ये प्रेम की गहराई है,
राग-द्वेष त्याग दो, चीज ये पराई है,
हँस के जो बीते पल, उसमें भलाई है,

खुशनुमा मौसम ने ली अब अंगड़ाई है,
सारे जहाँन में बस इसकी बड़ाई है,
चिन्ता, तनाव क्यूँकर मन में छुपाई है,
बसंत खुद ही रोगों की अद्भुत दवाई है,

गम ना हो पास, खुद की खुद से लड़ाई है,
इतने बसंत तुने व्यर्थ ही गँवाई है,
क्या क्या तु सोचे प्रिये, अब तक शर्माई है,
बसंत की इस बेला में, तु क्यूँ मुरझाई है,

ब्रज बिहारी सिंह
हिनू, राँची, झारखण्ड

################################

मोबाईल नं... 9934512477